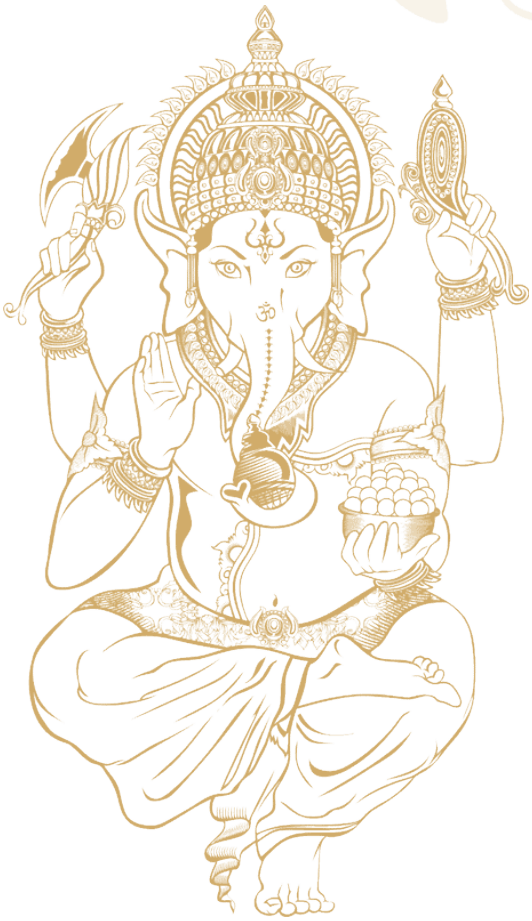

Mr.MUNNA KUMAR

Ms.SUPRIYA KUMARI

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120547501

Model: Horoscope-Matching

Order No: 120547501 Date: 14/12/2025

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
13-14/01/2003	जन्म तिथि	21-22/08/2004
सोम-मंगलवार	दिन	शनि-रविवार
घंटे 03:00:00	जन्म समय	01:00:00 घंटे
घटी 50:51:58	जन्म समय(घटी)	48:43:47 घटी
India	देश	India
Chhatarpur	स्थान	Garhwa
24:23:00 उत्तर	अक्षांश	24:10:05 उत्तर
84:11:00 पूर्व	रेखांश	83:48:18 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे 00:06:44	स्थानिक संस्कार	00:05:13 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:39:12	सूर्योदय	05:32:14
17:24:35	सूर्यास्त	18:23:00
23:53:43	चित्रपक्षीय अयनांश	23:55:10

वृश्चिक	लग्न	मिथुन
मंगल	लग्न लग्नाधिपति	बुध
वृष	राशि	तुला
शुक्र	राशि-स्वामी	शुक्र
कृतिका	नक्षत्र	स्वाति
सूर्य	नक्षत्र स्वामी	राहु
3	चरण	3
शुभ	योग	शुक्ल
विष्टि	करण	तैतिल
उ-उदय	जन्म नामाक्षर	रो-रोहिणी
मकर	सूर्य राशि(पाश्चात्य)	सिंह
वैश्य	वर्ण	शूद्र
चतुष्पाद	वश्य	मानव
मेष	योनि	महिष
राक्षस	गण	देव
अन्त्य	नाड़ी	अन्त्य
गरूड़	वर्ग	मृग

ग्रह अंश एवं विंशोत्तरी

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
सूर्य 1वर्ष 10मा 22दि		08:02:43	वृश्चि	लग्न	मिथु	04:13:07	राहु 7वर्ष 5मा 17दि	
राहु		29:23:12	धनु	सूर्य	सिंह	05:08:30	गुरु	
06/12/2021		05:47:17	वृष	चंद्र	तुला	14:28:12	08/02/2012	
07/12/2039		03:59:11	वृश्चि	मंगल	सिंह	13:18:19	08/02/2028	
राहु	18/08/2024	24:34:44	धनु व	बुध व	सिंह	08:56:50	गुरु	29/03/2014
गुरु	12/01/2027	21:41:08	कर्क व	गुरु	सिंह	28:45:53	शनि	09/10/2016
शनि	18/11/2029	12:32:59	वृश्चि	शुक्र	मिथु	19:27:06	बुध	15/01/2019
बुध	06/06/2032	29:37:09	वृष व	शनि	मिथु	28:23:31	केतु	22/12/2019
केतु	25/06/2033	13:59:10	वृष	राहु	मेष	10:20:44	शुक्र	22/08/2022
शुक्र	25/06/2036	13:59:10	वृश्चि	केतु	तुला	10:20:44	सूर्य	10/06/2023
सूर्य	19/05/2037	02:58:39	कुंभ	हर्ष व	कुंभ	11:07:58	चन्द्र	09/10/2024
चन्द्र	18/11/2038	16:07:34	मक	नेप व	मक	19:39:14	मंगल	15/09/2025
मंगल	07/12/2039	24:49:50	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	25:38:43	राहु	08/02/2028

व - वक्री स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

23:53:43 चित्रपक्षीय अयनांश 23:55:10

लग्न-चलित

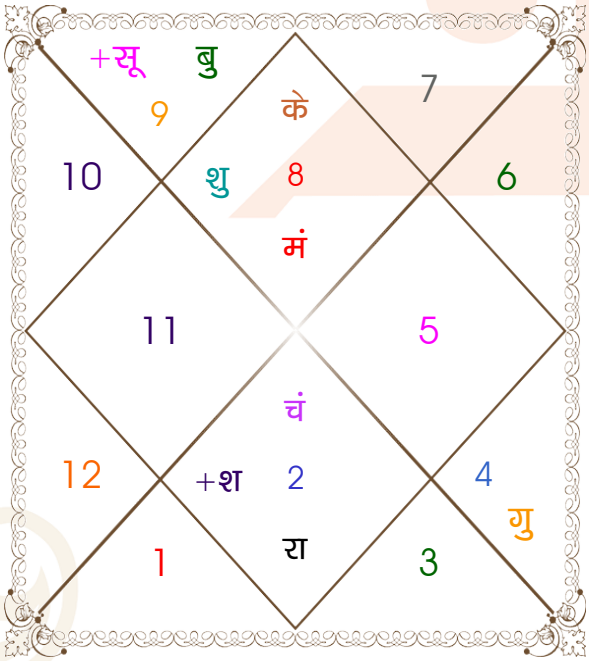

लग्न-चलित

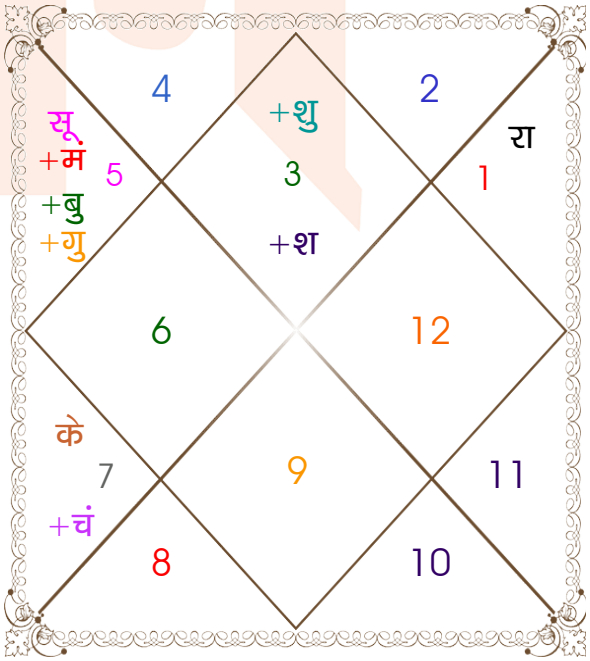

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	वैश्य	शूद्र	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	मानव	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	वध	क्षेम	3	1.50	--	भाग्य
योनि	मेष	महिष	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	राक्षस	देव	6	1.00	--	सामाजिकता
भकूट	वृष	तुला	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	अन्त्य	8	0.00	हाँ	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	12.50		

कुल : **12.5 / 36**

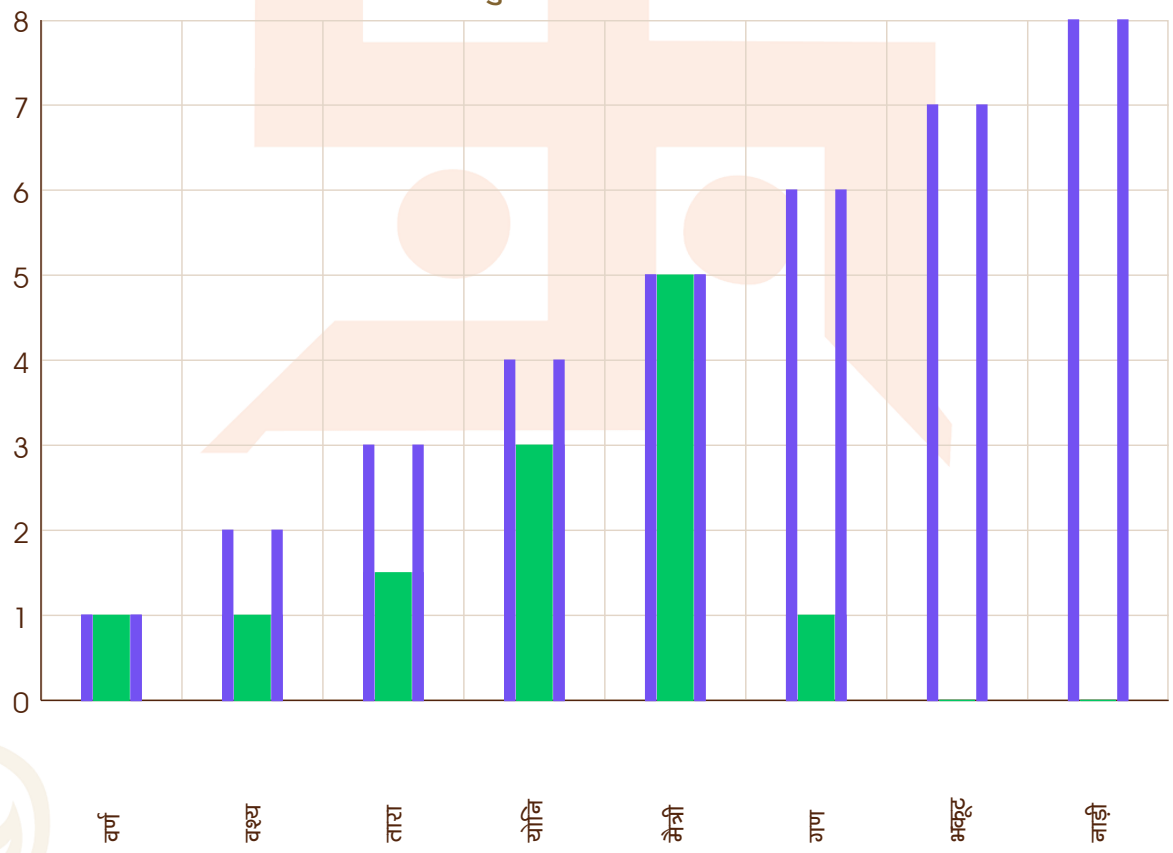

अष्टकूट मिलान

भकूट दोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता है।

नाड़ी दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के नक्षत्र एवं राशियां भिन्न-2 है।

डतण्डन्छछ। ज्ञन्ड।त का वर्ग गरूड़ है तथा डेंण्न्त्प्ल। ज्ञन्ड।त्प का वर्ग मृग है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्डन्छछ। ज्ञन्ड।त और डेंण्न्त्प्ल। ज्ञन्ड।त्प का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्डन्छछ। ज्ञन्ड।त मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

ढप्थ;डडम्गंवूदक्मइ;0द्धत्र1द्धझ क्योंकि मंगल डतण्डन्छछ। ज्ञन्ड।त कि कुण्डली में उच्च का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेंण्न्त्प्ल। ज्ञन्ड।त्प मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुकेऽथवा।
अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत्।।

शनि यदि एक की कुंडली में 1,4,7,8,12 वें भावों में हो और दूसरे के मंगल इन्हीं भावों में हों तो मंगल दौष नहीं लगता।

क्योंकि शनि डेंण्न्त्प्ल। ज्ञन्ड।त्प कि कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डेंण्न्त्प्ल। ज्ञन्ड।त्प कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्डन्छछ। झन्ड ।त तथा डेंण्न्त्प्ल। झन्ड ।त्प में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।

अष्टकूट फलादेश

वर्ण

डतण्डन्छछ। झ्न्ड ।त का वर्ण वैश्य है तथा डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड ।त्प का वर्ण शूद्र है। इसमें डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड ।त्प का वर्ण डतण्डन्छछ। झ्न्ड ।त के वर्ण से नीचा है अतः यह मिलान अति उत्तम मिलान है। जिसके फलस्वरूप डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड ।त्प अति आज्ञाकारी, सहायता करने वाली तथा बिना किसी शिकायत के पूरे परिवार की सेवा-सुश्रुषा एवं देखभाल करने वाली होगी। साथ ही हर किसी की सेवा के लिए डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड ।त्प हमेशा तत्पर रहेगी। बिना उचित कारण के वह किसी के साथ तर्क-वितर्क अथवा झगड़ा नहीं करेगी।

वश्य

डतण्डन्छछ। झ्न्ड ।त का वश्य चतुष्पद अर्थात पशु है एवं डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड ।त्प का वश्य द्विपद अर्थात मनुष्य है अतः यह मिलान औसत मिलान होगा। यद्यपि कि पशु एवं मनुष्य के स्वभाव एक-दूसरे से सर्वथा भिन्न होते हैं अतः दोनों के स्वभाव, गुण, पसंद/नापसंद बिल्कुल अलग हो सकते हैं किंतु फिर भी दोनों एक-दूसरे के सान्निध्य में रहेंगे। फिर भी कभी-कभी मनुष्य निर्दयी एवं आक्रामक हो जाता है। इसी प्रकार डतण्डन्छछ। झ्न्ड ।त एवं डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड ।त्प एक-दूसरे के साथ रहकर अपने जीवन का आनंद लेते रहेंगे किंतु कभी-कभी डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड ।त्प क्रूर एवं अमर्यादित व्यवहार का प्रदर्शन करती रहेगी।

तारा

डतण्डन्छछ। झ्न्ड ।त की तारा वध तथा डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड ।त्प की तारा क्षेम है। डतण्डन्छछ। झ्न्ड ।त की तारा वध होने के कारण यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। डतण्डन्छछ। झ्न्ड ।त बुरी आदतों, अधोपतन, चरित्रहीनता एवं भोग-विलास की आदतों का शिकार हो सकता है। डतण्डन्छछ। झ्न्ड ।त को शराब एवं ड्रग की लत लग सकती है किंतु डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड ।त्प लगातार उसकी भलाई के उद्देश्य से उसे सुधारने का प्रयास करती रहेगी। इस प्रकार उसके अच्छे प्रयासों का परिणाम सार्थक हो सकता है।

योनि

डतण्डन्छछ। झ्न्ड ।त की योनि मेष है तथा डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड ।त्प की योनि महिष है। अर्थात दोनों की योनि समान नहीं है। परन्तु इन दोनों योनि के बीच मित्रता का संबंध है अतः यह मिलान उत्तम मिलान रहेगा। जिसके कारण दोनों के बीच परस्पर प्रेम का भाव रहेगा। वैवाहिक एवं पारिवारिक जीवन में सौहार्द्रपूर्ण वातावरण रहेगा। दोनों एक दूसरे को सहयोग करेंगे। आपसी समझ एवं विश्वास की भावना रहेगी। जिससे अपने पारिवारिक व वैवाहिक जीवन में सभी कार्य आपसी सहमति से करेंगे एवं उनमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। जीवन में अक्सर धन प्राप्ति के सुअवसर मिलते रहेंगे। आय के नये-नये स्रोत बनेंगे तथा अच्छी आय के साथ-साथ अच्छी जमापूंजी होगी तथा परिवार में सुख समृद्धि बढ़ेगी। परस्पर प्रेम एवं सौहार्द्र की भावना के कारण दोनों एकदूसरे के प्रति अपनापन महसूस करेंगे। परिवार में शांति का

वातावरण बना रहेगा। साथ ही सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होती रहेगी। वर और कन्या का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। इन दोनों से उत्पन्न संतानें योग्य होंगी तथा वे भी अपने जीवन में सफलता प्राप्त करेंगे। इनके जीवन में सफलता इनके कदम चूमेगी। इस प्रकार इनका वैवाहिक जीवन सुखमय जीवन ही रहेगा।

मैत्री

अष्टकूट मिलान में ग्रह मैत्री कूट में डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त एवं डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प दोनों के राशि स्वामी समान हैं। अतः यह मिलान ग्रह मैत्री के विचार से अति उत्तम मिलान है। ज्यातिष की दृष्टि से यदि डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त एवं डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प दोनों के राशि स्वामी एक ही होने के कारण कुंडली मिलान में इसे अति उत्तम माना जाता है तथा पूरे 5 अंक प्रदान किए जाते हैं। जिसके कारण दोनों में असीम प्रेम बना रहेगा तथा साथ ही दोनों जीवन के हर क्षेत्र में एक-दूसरे का सहयोग करते रहेंगे। इनका प्रयास रहेगा कि वे स्वयं को आदर्श दम्पत्ति साबित कर सकें। इनके बच्चे योग्य, आज्ञाकारी, सफल एवं यशस्वी होंगे।

गण

डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त का गण राक्षस तथा डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प का गण देव है। अर्थात डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प का गण डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त के गण से श्रेष्ठ है। अतः यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। जिसके कारण डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त निर्दयी, कठोर, निष्ठुर एवं झगड़ालू हो सकते हैं। साथ ही डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त का डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प के साथ क्रूर व्यवहार करने की संभावना बनी रह सकती है। पति-पत्नी, अक्सर कुत्ते-बिल्लियों की भांति झगड़ा कर सकते हैं एवं परिवार में अक्सर अशांति का माहौल बना रहेगा। डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प हमेशा हर कदम पर समझौता करने की कोशिश करती रहेगी ताकि दोनों का संबंध बना रहे।

भकूट

डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त से डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प की राशि षष्ठम भाव में स्थित है तथा डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प से डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त की राशि अष्टम भाव में स्थित है। जिसके कारण यह मिलान बिल्कुल अच्छा मिलान नहीं है। क्योंकि इसमें षडाष्टक दोष लग रहा है। जिसके कारण डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त लाइलाज बीमारी से ग्रस्त हो सकते हैं तथा अक्सर उनके जलने अथवा दुर्घटनाग्रस्त होने की संभावना बनी रहेगी। डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प को स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकती हैं तथा परिवार के सदस्यों से वैमनस्य होने की संभावना भी रहेगी। पति-पत्नी के बीच वैचारिक मतभेद रह सकते हैं तथा अक्सर लड़ाई-झगड़े होते रहेंगे। दोनों के बीच तनावपूर्ण स्थिति पूरे परिवार के लिए समस्या एवं पीड़ा बन जायेगी। मुकदमेबाजी होने से अलगाव एवं तलाक की संभावना भी रहेगी।

नाड़ी

डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त की नाड़ी अन्त्य है तथा डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प की नाड़ी भी अन्त्य है। अर्थात दोनों की नाड़ी समान है, जो कि अष्टकूट मिलान की दृष्टि से दोषपूर्ण है।

अर्थात यह मिलान अच्छा मिलान नहीं है। डतण्डन्छछ। झन्ड ।त एवं डेंण्न्व्त्प्ल। झन्ड ।त्प की एक ही नाड़ी अन्त्य होने के कारण शरीर में श्लेष्मा की अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है। जोकि भावी दम्पत्ति के लिए खतरे की सूचक हैं। जिसके प्रभाववश संतान की मृत्यु भी संभव है। आपको श्वांस की तकलीफ, दमा जैसी बीमारियां तथा कमजोर स्वास्थ्य का सामना करना पड़ सकता है। आपकी संतान मानसिक रोग, सुस्त विकास एवं निम्न बौद्धिक स्तर की शिकार हो सकती हैं।

मेलापक फलित

स्वभाव

डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त की जन्म राशि पृथ्वी तत्व युक्त वृष है तथा डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प की जन्म राशि वायु तत्व तुला है। नैसर्गिक रूप से पृथ्वी तत्व एवं वायु तत्व में असमानता की बहुलता होती है। अतः डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त और डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प में स्वभाव प्रवृति एवं भावनात्मक असमानताएं रहेंगी जिससे दाम्पत्य जीवन में मधुरता की न्यूनता होगी। अतः यह मिलान विशेष उत्तम नहीं रहेगा।

डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त और डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प दोनों की राशि का स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से उपरोक्त असमानताओं में न्यूनता होगी तथा परस्पर मित्रता एवं समानता का भाव विद्यमान रहेगा। चूंकि डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त और डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प दोनों शुक्र ग्रह से प्रभावित है अतः दोनों संगीत सुदंर वस्तु एवं शांति के प्रेमी होंगे। यद्यपि आप अपने निर्णयों को कार्य रूप में परिणित करने में पर्याप्त समय लेंगे परन्तु अन्त में आपसी सूझ बूझ एवं सामंजस्य से उचित मार्ग निकालने में समर्थ होंगे। साथ ही डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त का इस कार्य में महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त एवं डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प की राशियां परस्पर षष्ठ एवं अष्टम भाव में पड़ती है यह एक प्रबल भकूट दोष माना जाता है । इसके प्रभाव से आपके परस्पर मतभेद उत्पन्न होंगे एवं सहअस्तित्व एवं स्वाभिमान के भाव से भी परस्पर विरोध का भाव उत्पन्न करेंगे। अतः परस्पर सामंजस्य से आपको ऐसी स्थितियों को उत्पन्न नहीं होने देना चाहिए तभी दाम्पत्य जीवन की सुख शांति बनी रहेगी।

डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त का वश्य चतुष्पद तथा डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प का वश्य मानव है। चतुष्पाद एवं मानव वश्य परस्पर नैसर्गिक विषमता का भाव रखते है। अतः डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त और डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प की अभिरूचियों मे अन्तर रहेगा शारीरिक मानसिक एवं भावनात्मक विषमताओं के कारण एक दूसरे को पूर्ण सन्तुष्ट करने में असफल होंगे। जिससे असन्तुष्टि एवं अप्रसन्नता का भाव रहेगा।

डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त का वर्ण वैश्य है अतः धनार्जन के प्रति उनकी रूचि रहेगी तथा व्यावहारिक दृष्टि कोण से कार्यों को करेंगें परन्तु डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प भी उनके कार्यों को पूर्ण करने मे सहायता करने को तत्पर रहेगी । फलतः कार्य क्षेत्र में सुदृढ़ता के साथ साथ आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ रहेगी ।

धन

डतण्डन्छछ। झ्न्ड।त और डेंण्न्ट्प्ल। झ्न्ड।त्प दोनों की तारा परस्पर सम है। अतः आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा तथा सामान्य गति से धन एवं लाभ अर्जित करने में दोनों तत्पर रहेंगे। भकूट भी सम ही रहेगा जिससे उनके लाभमार्ग स्वबुद्धिमता एवं परिश्रम से प्रशस्त रहेंगे। मंगल का भी उनकी आर्थिक स्थिति पर कोई दुष्प्रभाव

नहीं होगा। इस प्रकार उनके अर्थिक स्तर पर कोई विशेष नाटकीय परिवर्तन की संभावना नहीं होगी परन्तु सामान्य जीवन धनऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

इसके साथ ही कोई विशेष या अचानक लाभ के योगों में भी न्यूनता होगी तथा आर्थिक स्तर अपने ही अनुकूल रहेगा जिससे वे आर्थिक रूप से सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

स्वास्थ्य

डतण्डन्छछ। झन्ड ।त और डैण्न्ट्प्ल। झन्ड ।त्प दोनों अन्त्य नाड़ी में उत्पन्न हुए हैं। यद्यपि सामान्य रूप से यह नाड़ी दोष बनता है परन्तु इनका जन्म अलग अलग नक्षत्रों में हुआ है तथा राशि का स्वामी एक ही ग्रह है। अतः नाड़ी दोष का इन पर कोई प्रभाव नहीं होगा। लेकिन डैण्न्ट्प्ल। झन्ड ।त्प के स्वास्थ्य पर मंगल का दुष्प्रभाव रहेगा। इससे उनको तथा अन्य स्त्रीजन्य गुप्त या धातु संबंधी रोगों से परेशानी हो सकती है। अतः इसके दुष्प्रभाव को कम करने के लिए डैण्न्ट्प्ल। झन्ड ।त्प को नियमित रूप से हनुमानजी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए।

संतान

संतति प्राप्ति के दृष्टि से डतण्डन्छछ। झन्ड ।त और डैण्न्ट्प्ल। झन्ड ।त्प का मिलान उत्तम रहेगा। इसके प्रभाव से उनको संतति की प्राप्ति उचित समय पर होगी तथा इसमें किसी भी प्रकार का अनावश्यक विलम्ब नहीं होगा। साथ ही बच्चों के मध्य जन्म का अंतर भी अनुकूल रहेगा जिससे उनके उचित पालन पोषण करने के लिए पर्याप्त अवसर मिलेगा। इसके अतिरिक्त इनकी कन्या तथा पुत्र संतति की संख्या समान होगी।

प्रसव काल के प्रति डैण्न्ट्प्ल। झन्ड ।त्प के मन में अनावश्यक भय की भावना पहले से ही विद्यमान रहेगी जिससे वे मानसिक रूप से अशांति की अनुभूति करेंगी। अतः डैण्न्ट्प्ल। झन्ड ।त्प को चाहिए कि ऐसी भय की भावना को मन से दूर करें क्योंकि उनका प्रसव बिना किसी विध्न या समस्या के सम्पन्न होगा तथा किसी भी प्रकार से प्रसूति संबधी चिकित्सा की उनको अनावश्यकता नहीं होगी साथ ही उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा सुदंर, स्वस्थ एवं आकर्षक बच्चों को जन्म देने में समर्थ रहेंगी। फलतः इससे सास ससुर तथा पति उनसे प्रसन्न रहेंगे।

डतण्डन्छछ। झन्ड ।त और डैण्न्ट्प्ल। झन्ड ।त्प बच्चों की उन्नति व्यवहार कुशलता एवं बुद्धिमता से प्रसन्न रहेंगे। साथ ही माता पिता की इच्छा के विरूद्ध वे कोई भी कार्य नहीं करेंगे तथा उनके सम्मान का हमेशा ध्यान रखेंगे। लेकिन माता की अपेक्षा पिता से उनका विशेष लगाव रहेगा तथा उनकी आज्ञा का पूर्ण पालन करेंगे। अतः डतण्डन्छछ। झन्ड ।त और डैण्न्ट्प्ल। झन्ड ।त्प का पारिवारिक जीवन सुख शांति तथा आनंद पूर्वक व्यतीत होगा।

ससुराल-सुश्री

डैण्न्ट्प्ल। झन्ड ।त्प के सास से प्रायः अच्छे संबध रहेंगे। यद्यपि उनकी सास अन्य जनों के मामलों में कम ही हस्तक्षेप करने वाली महिला होंगी तथापि उनके कुछ सिद्धांत

डेंप्ैन्ट्प्ल। ज्ञन्ड ।त्प के लिए अनुकरणीय हो सकते है। साथ ही इन दोनों के मध्य कोई विशेष समस्या या मतभेद नहीं रहेंगे।

डेंप्ैन्ट्प्ल। ज्ञन्ड ।त्प अपने कुशल व्यवहार मधुर वाणी एवं सेवा भाव से ससुर को प्रसन्न एवं सन्तुष्ट करने में सफलता प्राप्त करेंगी। साथ ही ननद एवं देवरों के साथ भी उनके संबध मित्रता पूर्ण रहेंगे तथा उनको पूर्ण सहयोग एवं स्नेह प्रदान करेंगी। अतः उनका दिल जीतने में सफल रहेंगी।

इस प्रकार डेंप्ैन्ट्प्ल। ज्ञन्ड ।त्प के प्रति उनके सास ससुर का दृष्टि कोण आत्मयीता से पूर्ण रहेगा तथा घर में उसे पूर्ण सुख सुविधा तथा स्नेह प्रदान करेंगे।

ससुराल-श्री

डतण्डन्छछ। ज्ञन्ड ।त के अपनी सास से मधुर संबंध रहेंगे तथा आपसी सामंजस्य से इसमें निरन्तर वृद्धि होती रहेगी। सास को डतण्डन्छछ। ज्ञन्ड ।त अपनी माता के समान आदर प्रदान करेंगे तथा उनकी सेवा तथा सुख सुविधा का भी ध्यान रखेंगे। साथ ही समय समय पर सपत्नीक उनके यहां मिलने जाया करेंगे जिससे संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि होगी।

ससुर के साथ भी डतण्डन्छछ। ज्ञन्ड ।त के संबंधों में मधुरता रहेगी। साथ ही उन का भी इनके प्रति विशेष वात्सल्य रहेगा। व्यक्तिगत मामलों तथा आपसी संबंधों में मित्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा जिससे एक दूसरे की बातों का आदान प्रदान होता रहेगा। साथ ही साली एवं सालों से भी संबंधों में मित्रता सहानुभूति तथा सहयोग का भाव रहेगा तथा एक दूसरे से औपचारिक संबंध रहेंगे।

इस प्रकार ससुराल के लोगों का दृष्टिकोण डतण्डन्छछ। ज्ञन्ड ।त के प्रति सम्मानीय रहेगा तथा वे उनके व्यवहार से प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे।